ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

भारतीय सम्यता के कोषागार पुराणों में राष्ट्रीय भावना की प्रबलता – आध्यात्मिक एवं पौराणिक अध्ययन।

[1]डा0 कान्ती शर्मा

[1]एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद।

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 11 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

प्रस्तुत पुराणों में राष्ट्रीय भावनाओं को प्रदर्शित करता है। लेख में भारत भूमि के नामांकन, सीमांकन के साथ कर्मदायिनी, फलप्रदायिनी जहां देवता भी जन्म लेने के लिए आतुर रहते हैं। पुराणों में वर्णित महनीय विशेषताएं राष्ट्रीय भावना की ऊष्मा का ंचार करती है। भारत में जन्म लेने वाले भारती तथा महेन्द्र, मलय, सहय, शुक्तिमान, ऋक्ष, विन्ध्य तथा पारियात्र सातों पर्वतों को कुल पर्वत कहकर सम्बोधित किया है। जिसका पुराणों में स्पष्ट वर्णन है। वृहम पंराण, वृहमा के द्वारा भारम का भौगोलिक वर्णन, पद्म पंराण ब्रहमाण्ड वर्णन, शिव पुराण की उमा संहिता, वृहन्नीय पुराण में भारत भूमि का आध्यात्मिक महत्व, वायु पुराण– भागवत् पुराण में राष्ट्रीय तत्व, मार्कण्डेय पुराण में भारत भूमि, अग्नि पुराण में जातियों, जनपदों का वर्णन , वाराह पुराण में नदियों तथा पर्वतों की नामावली, कूर्मि पुराण में भौगोलिक विस्तार, नदियों सरिताओं की पवित्रता को लेख में ससन्दर्भ विश्लेषित किया गया है। लेख में पुराणों में वर्णित वर्ण धर्म, आश्रम धर्म के साथ राजा का राज्य के प्रति कर्तव्य, कर निर्धारण, आपदा से बचाव, राष्ट्र समृद्धि के लिए राज के द्वारा कर्तव्य का अनुपालन, राज्याभिषेक की प्ररोचनात्मक विधि, आक्रमण से रक्षा के उपाय के साथ राजाको प्रवीण रणदीक्षित होना पुराणों में अनिवार्य सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है जिसे लेख में यथा विवेचित किया गया है।

भविष्य पुराण में कलियुगी म्लेच्छों से राज्य रक्षा, राष्ट्र विरोधी शक्तियों को परास्त करना, राज्य में गर्भवती महिलाओं, कन्याओं, राष्ट्र में अन्न व सम्पत्ति वृद्धि एवं संरक्षण, गायों की रक्षा तथा प्रजनन, विद्वानों तथा वैज्ञानिकों का संरक्षण, आदि के प्रति राजा को कर्तव्य बोधगम्य होना पुराणों में परम आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में नदियों, सरिताओं तथा तीर्थस्थलों के आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय महत्व को

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

प्रमुखता से वर्णित किया गया है। प्रस्तुत लेख को प्रमाणिकता तथा मौलिकता प्रदान करने हेतु पुराणों में वर्णित समृद्ध साहित्य को उदाहरण सहित प्रस्तु किया गया है।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत लेख में पुराणों में राष्ट्र की एकता, अखण्डता के लिए राष्ट्रीय भावनाओं का निरूपण है। लेख में भारत का नामांकन तथा सीमांक पुराणों में वर्णित उदाहरणों सहित उल्लखित है। प्रस्तुत लेख में पवित्र नदियों, पर्वतों को उदाहरणों सहित उल्लखित किया गया है। जिसमें उनके आध्यात्मिक प्रेम प्रदर्शन के साथ राष्ट्रीय भावना को प्रदर्शित किया गया है। चूँकि पुराण हमारी संस्कृति के कोषागार माने जाते हैं अर्थात् पुराणों आध्यात्मिक नीत, धार्मिक नीति एवं सामाजिक तथा राजनीति की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है। पुराणों में वर्णित वर्णधर्म तथा आश्रम धर्म को राष्ट्रधर्म से जोड़ते हुए वर्णन किया गया है, जिसमें स्वधर्म का पालन करते हुए राष्ट्र की एकता, अखण्डता को कायम रखने के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। प्रस्तुत लेख में तीर्थस्थलों का महत्व तथा वहां के भ्रमण से आध्यात्मिक पुण्य की प्राप्ति को पुराण अनुरूप विश्लेषित किया गया है। लेख में पुराणों में वर्णित राष्ट्र के प्रति राष्ट्रीय भावना को यथा विश्लेषित किया गया है।

भारते तु कृतं कर्म शुभं वाशुमेव वा। आफलक्षयणं कूॅ भुज्यय्न्यत्र जन्तुभिः।। [1]

भारत भूमि परम पवित्र है, कर्मफलदायिनी है, परम प्रशंसनीय है और देवताओं के लिए दुर्लभ है। पुराण हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के कोषागार हैं लौकिक तथा पारलौकिक जीवन के अजस्त्र आदर्श हैं, वेदों का सरलीकृत रूप है, भारतीय शास्त्रों का मनोरम सार सर्वस्व है, ज्ञान भक्ति और वैराग्य का पावन संगम है, बुद्धि; का सम्बल है, हृदय का उछ्वास है, आध्यात्मवाद का हृद्यानवद्य रूप है, मानव जीवन का व्याख्यान है, भारतवर्ष के वास्तविक भूगोल के सुदृड़ मानदण्ड हैं, गौरवपूर्ण इतिहास के ज्वलंत पुंज हैं, सामाजिक ,धार्मिक एवं राजनैतिक विचारधाराओं के अक्षय उत्स हैं और भारत की भारतीयता के प्रबल प्रतीक हैं। पुराणों की उपर्यक्त महनीय विशेषताओं के कारण इनमें राष्ट्रीय भावना की उष्मा का अनुभव नितान्त नैसर्गिक है।

पुराणों में भारत भूमि–

तस्यर्षभोअभवत्पुत्रो मेरूदेव्यां महाद्युति। ऋषाद भरतो जज्ञे ज्येष्ठः पुत्रतशतस्य सः।।

कृत्वा राज्यं स्वधर्मेण तीष्टिवा विविधान मखान्।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

अभिषिच्य सुतं ज्येष्ठं भरतं पृथ्वीपतिम्।।

तपसे सः महाभागः पुलस्त्याश्रमं ययौ। वाणप्रस्थविधानेन तत्रापि कृनिश्चयः।।

तत्पश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते।।[2]

जनमानस में अपने राष्ट्र के प्रति अभिनिवेश और गौरवधायक आकर्षण उद्दीप्त करने के लिए अपने राष्ट्र (भारत) के नाम की व्युत्पत्ति भी गई। इस सन्दर्भ में दो प्रकार की विचारधाराएं दी गई हैं। कुछ पुराणों में तो ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर इस राष्ट्र का नाम ''भारत'' पड़ा है। जबकि अन्य पुराणों राजा दुष्यन्त के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर इस देश को भारत की संज्ञा प्राप्त हुई है।[3]

पुराणों में भारतीय सीमाओं का सीमांकन :–

उत्तरेण समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणे। वर्षतद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

नवयोजन साहस्रो विस्तारश्च द्विजोत्तमः। कर्मभूमिरयं स्वर्गपवर्ग च इच्छताम।।

महेन्द्रो स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्ते च गच्छति। न खल्वन्यत्र मर्त्यानां कर्मभूमो विधीयते।।[4]

वृहम पुराण में वृहमाण्डवर्णन के प्रसंग में जम्बूदीप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सागर से उत्तर दिशा में हिमगिरि से दक्षिण दिशा में भारतवर्ष स्थिति है इसमें जन्म लेने वाले 'भारती' कहलाते हैं। यह देश नव सहस्र योजनों में विस्तृत है, स्वर्ग और मोक्ष की कामना करने वालों की यह परम उर्वर कर्मभूमि है । महेन्द्र, मलय, सहय, शुक्तिमान, ऋक्ष विन्ध्य तथा परियात्र नाम सात पर्वत इसी के अन्तर्गत हैं।

भारत देश की बात करते हुए वृहमा कहते हैं। यह देश गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, विपाशा(व्यास), वितस्ता(झेलम), गोमती, दृषद्वती, चर्मण्वती, शिप्रा, नर्मदा, वेत्रवती, तुड़गभद्र आदि अनेक नदियों का पवित्र स्थल है। इसमें मत्स्य, मुकुटकुल्य, कुन्तल, कौशल, आन्ध्रक, कलिड़ग, वाहीक, वाटधान, सुतीर, वाह्लीक, केरल, गान्धार, भवन, सौवीर, मद्र,, कैकेय, कम्बोज, दशेरक, किरात, काश्मीर, मगध, अंड़ग, वंड़ग, मलद, विदेह, नन्द, महाराष्ट, माहषिक, आमीर, पुलिन्द, विदर्भ, दण्डक, शूर्पारक , तालकट, दशार्ण आदि अनेक प्रदेश है।[5]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

पद्म पुराण के वृहमाण्डवर्णन में उल्ललिखत है कि यह देश मनु, पृथु, इच्छाकु, ययाति, अम्बरीष, नहुष, मुचकुन्द, कुबेर, उशीनर, ऋषमदेव, एल, नृग, कुशिक, गाधि, सोम, दिलीप राजाओं तथा कुल पर्वतों और सरिताओं ने इसकी रम्यता, उपादेयता और पवित्रता को बड़ाया है। इसमें विभिन्न जनपद पाये जाते हैं।[6]

वृहम पुराण के अनुरूप शिव पुराण में भारतवर्ष की भौगोलिक सीमा, सामाजिक स्थिति तथा धार्मिक दशा का वर्ण है।[7] शिवपुराण की उमासंहिता के अनुसार भारतवर्ष का एक सहस्र योजन का दक्षिणोत्तर तक विस्तार बताया गया है। इस भू–भाग की रमणीयता , वरणीयता तथा अभिलषणीयता पूर्ववत् कही गयी है।[8] वायु पुराण तथा भागवत् पुराण में भी पूर्वसदृश वर्णन उपलब्ध है। वृहन्नारीय पुराण में भारत भूमि को कर्मफलदायिनी बताया गया है। जहां देवता भी जन्म के लेने के लिए आतुर रहते हैं।[9] देवताओं की इस विचारधारा से यह सिद्ध होता है कि यह भारत भूमि अति पवित्र है। कर्मफलदायिनी है। परम प्रशंसनीय है और देवताओं के लिए दुर्लभ हैं। मार्कण्डेय पुराण में भारत भूमि के लिए स्पष्ट किया गया है कि जहां मनुष्य अपने कार्यों द्वारा पुण्यार्जन कर सकात है। यह देश पृथ्वी के अन्य देशों से श्रेष्ठ है।[10] अग्नि पुराण में भारत भूमि को कर्मभूमि बताया गया है। अग्नि पुराण में भौगोलिक सीमा कुल पर्वतों, प्रमुख नदियों, जातियों जनपदों का संक्षिप्त उल्लेख है। किन्तु वर्ण यद्यपि प्रशंसनीय नहीं है।[11] वाराह पुराण तथा स्कन्द पुराण में कुल पर्वतों तथा नदियों नामावली लेकिन वामन पुराण[12] तथा कूर्मि पुराण[13] में विस्तृत भूभाग का वर्णन जिसमें कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक जातियों उपजातियों का वर्णन है।

गायन्ति देवाः किलगीतिकानि धन्यास्तु ये भारत भूमि भूमिभागे। स्वर्गपवर्गस्य फलार्जनाम भवन्ति भूयः पुरूषाः सुरत्वात्।।[14]

गरूड़ पुराण तााि वायु पुराण में भारतवर्ष का सांगोपाड़ग विवरण प्रस्तुत किया है। गरूड़ पुराण में तो देवताओं द्वारा गीत गाने भारतवर्ष की प्रशंसा करने तथा पुनः स्वर्गापलवर्गलाभ हेतु वहां जन्म प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है।

<u>पुराणों में राष्ट्रीय अखण्डता :–</u> पुराणों में भारत राष्ट के प्रति अभिनिवेश की अभिव्यंजना हुई। अपने देश की अखण्डता की सौभाग्य माना और देश भंग को दुर्भाग्य माना गया है। स्वाधीनता को जीवन की सफलता तथा पराधीनता को जीवन मृत्यु की संज्ञा दी गयी है। राष्ट्र रक्षा हेतु मदालसा का पुत्रों

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

को राजधर्म तथा राजनीति की शिक्षा देना राष्ट्र रक्षा–सुरक्षा को स्पष्ट करता है। यही राष्ट्र की समृद्धि हेतु सभी सम्भव उपायों की करणीयता पर बल दिया गया हैं।[15] राज्य की प्रजा के प्रति स्नेहाभाव के कारण राष्ट्रनायकों द्वारा भी प्रजाजनों की आयु की वृद्धि हेतु भगवान से प्रार्थना की गई है। इस प्रसंग में राज राजवर्धन की कथा उदाहरणी है ं।[16] **"ओंकार शब्दो विप्राणां येन राष्ट प्रवर्धते। स राजा वर्धते योगाद् व्याधिमिश्च न बाध्यते।।"**[17]

राष्ट्र में अपशकुनों को देखकर राष्ट्रीय विपत्ति को दूर करने के लिए, अतिवृष्टि, अनावृष्टि और दुर्भिक्ष जैसे राष्ट्रीय संकटों का सामना करने के लिए पुराणों में उपदेश दिया गया है। राष्ट्र की रक्षा तथा समृद्धि के लिए विप्रों द्वारा ओमशब्द के उच्चारण पर भी आस्था प्रकट की गयी। राज्य की प्रशासनिक सुव्यवस्था तथा रक्षा –सुरक्षा के उद्देश्य से पुराणों में राजधर्म किंवा राजनीति पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इसके लिए राजा के राज्याभिषेक की प्ररोचनात्मक विधि बतायी गयी है। राज की जीवन चर्या पर प्रकाश डाला गया है। ताकि वह सकुशल रहकर राष्ट्र का समुचित भरण पोषण कर सके। आन्तरिक व्यवस्था तथा शत्रु के आक्रमण से रक्षा करने की दृष्टि से सुदृड़ और सर्वविधि सैन्य व्यवस्था तथा उसके लिए रणदीक्षा का भी उपदेश दिया है। तथा साम, दाम, दण्ड, भेद को अपनाने की मंत्रणा दी गयी है।[18] अपने राष्ट्र का भली भॉति पोषण करने वाले राष्ट्रनायक को मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग की प्राप्ति होती है– '' **किं यज्ञे स्तपया तस्य प्रजा वस्य न रक्षित। सुरक्षिताः प्रजा यस्यस्वर्गतस्य गृहोपमः।।**[19]'' **राष्ट्र पीडाकारों राज नरकोवसते चिरम्**।[20] राजा की लापरवाही अथवा उसके स्वयंकृत आचरण से यदि राष्ट्र की प्रजा दुखी होती है। तो उसे चिरकाल तक नरक की यातना भोगनी पड़ती है। आयकर लेते समय राजा को ध्यान रखना अति आवश्यक है कि जनता अधिक पीड़ित न हो। राजा को चाहिए कि वह राज्य के विद्वानों वैज्ञानिकों की अवज्ञा न करें क्योंकि इनकी अवज्ञा से कुपित होकर उसके राष्ट्र का विनाश कर सकते हैं।[21] पुराणों में ऐसे प्रसंगों का भण्डार है जहां की आध्यात्मिक संस्कृति और सभयता की रक्षा हेतु विभिन्न देवी देवताओं ने तथा राजा ने उक्त संस्कृति और सभ्यता के विरोधी दैत्यों, दानवों राक्षसों एवं म्लेच्छों के साथ संघर्ष और संग्राम किए। भविष्य पुराण में उल्लेख है जब कलियुगीन म्लेच्छों तथ म्लेच्छ राजाओं की उत्पत्ति एवं सम्पत्ति का वर्णन करके और उनकी भारतीय विरोधी प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालकर देशभक्त भारतीय नरेशों द्वारा उन पर विजय प्राप्त की गयी । अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, भोज, पृथ्वीराज, क्षत्रिपति शिवाजी आदि भारत भक्त नरेशों के राष्ट्र योगी कार्यकलाप विशद् रूप में वर्णित हैं ।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

अपने राष्ट्र में सुखशान्ति एवं समृद्धि की वृद्धि होती रहे, राष्ट्रनायक तथा राष्ट्रसेना प्रसन्नचित्त रहे, अपने राष्ट्र की गर्भवती महिलाएं कल्याणवती रहें, कन्याएं कष्ट न पाएं, राष्ट्र में अन्न सम्पत्ति की वृद्धि होती रहे। गौएं बहुक्षीरा रहें, राष्ट्र में विद्वान ब्राहमणों (वैज्ञानिाकों) की कुशलता में वृद्धि हो, समय पर वृष्टि हो, कृषि कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो, निर्भीकता बढ़े, पशु पुष्ट हों, धार्मिक सम्मान पाएं तथा सभी नागरिक सुख शान्ति से रहें इन सबके लिए वाराह पुराण में 'भगवदाराधना' का भी उपदेश दिया गया है।[22] इससे प्रतीत होता है कि पुराणकारों के मनोमस्तिष्क में राष्ट्रीय चेतना की भावना जाग रही थी।

पर्वत और नदियों के प्रति राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय भावना :– भारत वर्ष के पर्वतों, नदियों तथा तीर्थों ने भारतीयों में आत्मीयता तथा श्रद्धा की अतिशय प्ररोचना प्रकट कर राष्ट्रीय भावना की अमन्द मन्दाकिनी प्रवाहित की। पुराणों के 'भुवनवर्णन' प्रसंग में जम्बूदीप के अन्तर्गत 'भारतभूमि' वर्णन में महेन्द्रगिरि, मलयगिरि, सहयगिरि, शुक्तिगिरि, ऋक्षगिरि, विन्ध्यगिरि और परियात्रगिरि नाम सात कुल पर्वतों का कुलपुरूष के समान आदर भाव का वर्णन किया है। विन्ध्याचल, सह्याचल, मलयाचल, त्रिकूट आदि अन्य भारतीय पर्वतों की भी भव्यता, रम्यता, उपादेयता तथा लोकप्रियता पर प्रकाश डालकर इनके प्रति जनमानस को जागरूक किया है।

पर्वतों से उद्भूत होने वाली गंगा, अलकनंदा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, गोमती, सरयू, शतुद्रु (सतलज) विपाशा (व्यास), वितस्ता (झेलम) , चन्द्रभागा, चर्मण्वती (चम्बल), वेत्रवती, निर्विन्ध्या, रेखा, शिप्रा, तमसा, नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, गण्डकी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभुद्रा आदि अनेक पावनी सरिताओं का बड़े ही अभिनिवेश और ममत्व के साथ वर्णन किया गया है। इनकी आर्थिक उपादेयता के साथ इनकी धार्मिक उपयोगिता को भी रोचकता पूर्वक अभिव्यक्त कर के इनके प्रति भारतीयों के मनोमस्तिष्क का रागात्मक सम्बन्ध जोड़ा गया है।[23] भारत वर्ष के सहस्रोतीर्थ स्थलों का पुराणों में हृदय स्पर्शी प्रतिपादन हुआ तथा उनकी बहुमुखी उपादेयता को प्रकट किया गया है। पद्म पुराण तथा वामन पुराण आदि कुछ पुराणों में इनकी यात्रा करने वाले को अपनी मातृभूमि अर्थात् समग्र भारत भूमि के दर्शन का परम लाभ प्राप्त होता है।[24] भारतीयों के लिए तीर्थ स्थान अतीव महत्वपूर्ण हैं उनके मनोभूमि में तीर्थयात्रा की कामनावल्लरी सदैव लहलहाती रहती है। इनका विधिवत् दर्शन का लाभ प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को समस्त भारतवर्ष की यात्रा करनी होती है। फलस्वरूप उनके हृदय में

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

अपने देश के प्रति भी एक अनिर्वचनीय और अदमनीय रागात्मक सम्बन्ध सृदृड़ हो जाता है। और वह अपने समग्र राष्ट्र के साथ अपनी आत्मीयता के सम्बन्ध में पूर्णरूपेण जुड़ जाता है।

पुराणों में वर्ण धर्म तथा आश्रम धर्म द्वारा र राष्ट्रीय भावना का विकास :– भारतीय संस्कृति में वर्णव्यवस्था और आश्रम व्यवस्था का प्राचीन युग से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। समस्त वर्गों के लोग अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सुख, समृद्धि, शान्ति, एकता और सहअस्तित्व का अनुभव भी करते हैं। वृहम पुराण सदाचार निरूपण के प्श्चात् मुनियों की प्रार्थना पर वेदव्यास ने भारतीय समाज के ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र संज्ञक चारों आश्रमों के धर्मों पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि ब्रहमण को चाहिए कि वह दया , तप, यज्ञ और स्वाध्याय में सतत् प्रवृत्त रहे, जीविका हेतु अध्यापन करे, पालन करे, शास्त्रास्त्रों का अध्ययन करे। इनके अतिरिक्त सत्यवादिता, सहनशीलता, निरभिमानिता, शुचिता, प्रियवादिता, अकृपणता आदि कुछ सामान्य धर्म गिनाये गये हैं। जो सभी वर्णों के लोगों के लिए विहित है। इसके अतिरिक्त आश्रम धर्म का भी पालन करे।

पद्मपुराण में आश्रम धर्मों के विश्लेषण पर पर्याप्त बल दिया गया है।[25] विष्णुपुराण में वृहम पुराण की शब्दाबली एवं भावावली से ही मिलती है। जिसमें वर्णाश्रम धर्म पर प्रकाश डाला गया है। विष्णु पुराण में आश्रमवासियों की क्रमिक सूची दी गयी है। 26 पुराणों में विश्व के प्राणिमात्र के कल्याण की कामना की गई है। सभी के नैरूज्य को चाहा गया है। और कोई भी दुःखी न हो , एतदर्थ परमात्मा से प्रार्थना की गयी है जो भारतीय मनीषा को अन्तर्राष्ट्रीय भावना से जोड़ती है। [26]

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. *वृहन्नादीय पुराण 3/49–74*
2. *विष्णुपुराण 2/1/28–32*
3. *ब्रहमपुराण 13/56–57 ,भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व 3/33–36, वराह पुराण 192/4–12*
4. *वृहमपुराण 19/1–27*
5. *वही पृ0 27/1–64*
6. *पद्म पुराण स्वर्गखण्ड, अध्याय 6–9*
7. *विष्णु पुराण 2/3/1–26*
8. *शिवमहापुराण 5/18/1–21*

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

9. वृहन्नारदीय पुराण 3/49/74

10. मार्कण्डेय पुराण 55/21–22

11. अग्नि पुराण अध्याय 118 तथा 369/6

12. परमल पुराण 12/8–58

13. कूर्म पुराण 1/45/20–43

14. गरूड़ पुराण उत्तराखण्ड 1/6

15. मार्कण्डेय पुराण अध्याय 27

16. मत्स्य पुराण अध्याय 227–237

17. गरूड़ पुराण पूर्वखण्ड 111/15

18. अग्नि पुराण अध्याय 218–242

19. अग्नि पुराण 223/9

20. वही 223/7

21. बामन पुराण सरोमाहात्म्य 18/25–35

22. वाराह पुराण 192/4–12

23. वृहमपुराण 19/1–27, पद्म पुराण, स्वर्गखण्ड अध्याय 6–9, विष्णु पुराण 2/3/1–26, शिवमहापुराण 5/18/1–21, वायु पुराण 45/69–137, भागवत् पुराण पंचम स्कंध अध्याय 19, मार्कण्डेय पुराण अध्याय 54–59, अग्नि पुराण अध्याय 118–119, वाराह पुराण अध्याय 78–85, स्कन्द पुराण माहेश्वर खण्ड कुमारिका खण्ड 39/110–120, वामन पुराण अध्याय 13 तथा 59, कर्मपुराण 1/45/20–45, मत्स्य पुराण अध्याय 112–121, गरूड़ पुराण पूर्व खण्ड अध्याय 45, ब्राहमण पुराण अध्याय 16 ।

24. वृहम पुराण अध्याय 25–26, 57,79–177, पद्म पुराण स्वर्ग खण्ड अध्याय 10–14,16–21

25. पद्म पुराण स्वर्गखण्ड, अध्याय 51–61

26. विष्णु पुराण तृतीयांश अध्याय ,10–12

27. भविष्य पुराण 3/2/35/14